

पहला लैवेंडर महोत्सव

प्रलिस के लयः

परपल रेवोलयूशन, अरोमा मशऱन ।

मेन्स के लयः

लैवेंडर की खेती और इसका महत्त्व, कृषऱभूलय नरऱधारण, कृषऱसंसाधन ।

चरचा में क्यों?

हाल ही में जम्मू के भदरवाह में भारत के पहले लैवेंडर महोत्सव का उदघाटन कयऱा गया ।

- लैवेंडर की खेती ने जम्मू और कश्मीर के दूरदराज़ के कृषेतरों में लगभग 5,000 कसऱानों और युवा उदयमयऱों के लयऱे रोज़गार पैदा कयऱा है । 200 एकड़ में इसकी खेती करने वाले 1,000 से अधकऱ कसऱान परवार इसमें शामिल हैं ।

लैवेंडर क्रांतऱः

- परचयः**
 - बैंगनी या लैवेंडर क्रांतऱ 2016 में केंद्रीय वज्जऱान और प्रौदयऱगकी मंत्रालय द्वारा [वैज्जऱानकऱ एवं औदयऱगकऱ अनुसंधान परषऱद \(CSIR\)](#) अरोमा मशऱन के माध्यम से शुरु की गई थी ।
 - जम्मू-कश्मीर के लगभग सभी 20 ज़ऱऱऱों में लैवेंडर की खेती की जाती है ।
 - पहली बार में कसऱानों को खेती के लयऱे मुफ्त में लैवेंडर के पौधे दयऱे गए, जबकऱ जऱन कसऱानों ने पहले लैवेंडर की खेती की थी, उन्हें 5-6 रुपए प्रति पौधा दयऱा गया था ।
- लक्ष्यः**
 - आयातऱ सुगंधऱऱे तेलों की बजाय घरेलू कसऱऱों को बढ़ावा देकर घरेलू सुगंधऱऱे फसल आधारऱऱे कृषऱ अर्थव्यवस्था का समर्थन करना ।
- उत्पादः**
 - मुख्य उत्पाद लैवेंडर तेल है जो कम-से-कम 10,000 रुपए प्रति लीटर बकऱता है ।
 - लैवेंडर का जल जो लैवेंडर के तेल से अलग होता है, का उपयोग अगरबत्ती बनाने के लयऱे कयऱा जाता है ।
 - [हाइड्रोसोल](#) जो कऱऱऱों से आसवन के बाद बनता है, साबुन और रूम फ्रेशनर बनाने के लयऱे उपयोग कयऱा जाता है ।
- महत्त्वः**
 - यह 2022 तक [कृषऱ आय को दऱगुना](#) करने की सरकार की नीतऱ के अनुरूप है ।
 - यह उभरते कसऱानों, कृषऱ उदयमयऱों को आजीवकऱ के साधन प्रदान करने में मदद करेगा और [स्टार्टअप इंडयऱा अभयऱान](#) एवं कृषेतर में उदयमशीलता की भावना को बढ़ावा देगा ।
 - 500 से अधकऱ युवाओं ने बैंगनी क्रांतऱ का लाभ उठाया था और अपनी आय में कई गुना वृद्धऱ की ।

अरोमा मशऱनः

- परचयः**
 - इतर उदयऱग और ग्रामीण रोज़गार के वकऱास को बढ़ावा देने के लयऱे कृषऱ, प्रसंसकरण और उत्पाद वकऱास के कृषेतरों में वांछऱऱे हस्तकृषेप के माध्यम से सुगंध कृषेतर में परिवरतनकारी बदलाव लाने के लयऱे CSIR द्वारा अरोमा मशऱन की परकऱलपना की गई है ।
 - यह मशऱन ऐसे आवश्यक तेलों के लयऱे सुगंधऱऱे फसलों की खेती को बढ़ावा देगा, जऱनकी अरोमा (इतर) उदयऱग में काफऱी अधकऱ मांग है ।
- यह मशऱन भारतीय कसऱानों और अरोमा (सुगंध) उदयऱग को 'मेन्थॉलकऱ मऱऱऱे' जैसे कुछ अन्य आवश्यक तेलों के उत्पादन व नरऱयात में वैश्वकऱे प्रतिनिधऱऱे बनने में मदद करेगा ।
- इसका उददेश्य उच्च लाभ, बंजर भूमऱ के उपयोग और जंगली एवं पालतू जानवरों से फसलों की रकृषा करके कसऱानों को समृद्ध बनाना है ।

■ अरोमा मशिन चरण- I एवं चरण II:

- पहले चरण के दौरान CSIR ने 6000 हेक्टेयर भूमि पर खेती करने में मदद की और देश भर के 46 आकांक्षी ज़िलों को कवर किया। इसके अलावा 44,000 से अधिक लोगों को प्रशिक्षित किया।
- फरवरी 2021 में CSIR ने अरोमा मशिन का दूसरा चरण शुरू किया जिसमें 45,000 से अधिक कुशल मानव संसाधनों को शामिल करने का प्रस्ताव है जिससे देश भर में 75,000 से अधिक किसान परिवारों को लाभ होगा।

■ नोडल एजेंसी:

■ सीएसआईआर-केंद्रीय औषधीय और सुगंधित पौधा संस्थान (CSIR-CIMAP), लखनऊ इसकी नोडल एजेंसी है।

■ संभावित परिणाम:

- लगभग 5500 हेक्टेयर अतिरिक्त क्षेत्र को सुगंधित नकदी फसलों की कैंपेवि खेती के तहत लाना, विशेष रूप से पूरे देश में वर्षा संचित / नमिनीकृत भूमि को लक्षित करना।
- पूरे देश में किसानों/उत्पादकों को आसवन और मूल्यवर्द्धन के लिये तकनीकी और ढाँचागत सहायता प्रदान करना।
- किसानों/उत्पादकों हेतु लाभकारी मूल्य सुनिश्चित करने के लिये प्रभावी बाय-बैक (Buy-Back) तंत्र को सक्षम करना।
- वैश्विक व्यापार और अर्थव्यवस्था में उनके एकीकरण के लिये आवश्यक तेलों व सुगंध सामग्री का मूल्यवर्द्धन करना।

स्रोत: पी.आई.बी.

PDF Reference URL: <https://www.drishtias.com/hindi/printpdf/first-lavender-festival>

